प्रो. राय ने रेखांकन से किया भारतीय विरासत को जीवंत

प्रो. हरीश चंद्र राय के यथार्थवादी शैली में गतिशील रेखांकन इतने सजीव दिखते हैं कि ऐसा लगता है कि अभी बोल पड़ेंगे। प्रो. हरीश के रेखांकन अजंता, एलोरा, राजपूत और मुगल शैलियों पर आधारित हैं। उन्होंने रेखांकन और चित्रों के माध्यम से भारतीय विरासत की आत्मा को जीवंत किया है। वह न केवल शानदार चित्रकार और मूर्तिकार थे, बल्कि एक अच्छे शिक्षक भी थे। शिमला से पहले उन्होंने बरेली कॉलेज में भी अपनी सेवाएं दी थीं। वह ताउम्र कला और रंगों की दुनिया में सितारे की तरह चमकते रहे। उन्होंने कला क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया। वह हिमाचल में आर्ट्स कॉलेज के फाउंडर प्रिंसिपल भी रहे। हिमाचल सरकार ने उनकी कला को सराहा और राज्य संग्रहालय शिमला में हरिश चंद्र कला दीर्घा की स्थापना की। भले ही आज वे हमारे बीच नहीं हैं, मगर उनकी कलाकृतियां कलाप्रेमियों के दिलों में हैं।

–रामराज मिश्रा, बरेली

27 मई वर्ष 1923 को बरेली के मोहल्ला मलूकपुर में हरीश चन्द्र राय का जन्म हुआ था। उन्होंने लखनऊ स्थित आर्ट्स कॉलेज से स्नातक किया था। वे लंबे समय तक वह बरेली कॉलेज में हिंदी-कला के शिक्षक रहे। उन्होंने बरेली कॉलेज में सोसाइटी ऑफ आर्ट्स का गठन किया। इसी सोसाइटी के माध्यम से एक रेखांक केंद्रित पुस्तक क्रिएशन ऑफ आर्ट्स 1952 में प्रकाशित हुई थी। बड़े बाजार की एक इलेक्ट्रिक प्रेस से इसका मुद्रण बीएस वर्मा ने किया था। हरीश चंद्र ने शिमला में 1961 से 1979 तक सेवाएं दीं। वह पोर्ट्रेट, सीनरी आदि बनाने में ऑयल, वाटर और पेस्टिल कलर का इस्तेमाल करते थे। उन्होंने 96 वर्ष तक निरंतर कला का सर्जन किया। हिमाचल सरकार ने वर्ष 2001 में उन्हें अचीवमेंट पुरस्कार से भी नवाजा। आजादी से पहले उन्होंने ब्रिटिस सेना में आर्टिस्ट के रूप में सेवाएं दी थीं।

सर्वपल्ली राधाकृष्णन का बनाया था लाइव स्कैच

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जब उपराष्ट्रपति थे, तब वह वर्ष 1955 में बरेली कॉलेज के दीक्षांत समारोह में आए थे। वहां हरीश चंद्र राय ने उनका लाइव पेंसिल स्कैच बनाया था, जिस पर डॉ. सर्वपल्ली के हस्ताक्षर भी हैं। हरीश चंद्र राय प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु शिवानंद के शिष्य थे। उन्होंने अपने गुरु का भी पेंसिल स्कैच तैयार किया था, जिस पर उनके गुरु के हस्ताक्षर हैं। उनके रेखांकन यथार्थवादी शैली में हैं। उन्होंने हस्त मुद्राएं, पैर की मुद्राओं का रेखांकन किया। भाव-भंगिमा को व्यक्त करने के लिए उन्होंने वन लाइन स्कैच बनाए। मुगल, पहाड़ी और राजस्थानी शैली के एक चश्म (आंख), चेहरे भी बनाए, ताकि मुखाकृतियों का अध्ययन बारीकी से किया जा सके। जमीन पर बैठे और खड़े लोगों के चित्र अलग-अलग मुद्राओं में बनाए हैं। शिमला में रहते हुए उन्होंने पहाड़, जंगल और पर्वत के प्राकृतिक दृश्यों को भी उकेरा, जिसमें उन्होंने फोटोग्राफी का सहारा नहीं लिया। जैसे आंखों की बनावट, साफ सुथरे नाक-नक्श, अंगुलियों का लचीलापन है, जो श्रेष्ठ रेखांकन में विशेषताएं होती हैं, वह सभी उसमें विद्यमान हैं।

दिग्गज चित्रकारों का मिला सानिध्य

हरीश चंद्र राय के कला गुरु एवं प्रसिद्ध चित्रकार एके हलदर, श्रीधर मजूमदार, एलएम सेन रहे, जिनके सानिध्य में उन्होंने काम किया। उनकी पुत्री एवं रंगकर्मी अमला राय ने बताया कि 2023 में पिता के जन्मशताब्दी वर्ष पर शिमला में कला उत्सव का आयोजन किया था। अब हर साल पिता की स्मृति में कला उत्सव का आयोजन होता है। पिता के कला पक्ष के संदर्भ में उन्होंने बताया कि पिताजी का ध्यान स्कैचिंग पर ज्यादा रहता था। वह अभ्यास के लिए अपने छात्रों को भी यही सीख देते थे। जीवनभर वह कला में ही रमे रहे। 30 अक्टूबर 2018 को मुंबई में उनका निधन हुआ था।

प्रारंभिक रेखांकन का अनमोल संग्रह

'प्रो. हरीश चंद्र राय के रेखांकन' पुस्तक के संपादक बरेली निवासी हरिशंकर शर्मा कहते हैं कि पुराने कलाकारों की कलाकृतियां तो मिल जाती हैं, मगर आरंभिक कार्य दुर्लभ होते हैं। यह पुस्तक उनकी प्रारंभिक रेखांकन का अनमोल संग्रह है, जो कला जगत के लिए महत्वूपर्ण है। यह पुस्तक हरीश चंद्र राय की बेटी अमला राय को समर्पित है।

आर्ट गैलरी

विंसेंट वान गॉग की पेंटिंग आइरिस

आइरिस डच कलाकार विंसेंट वान गॉग की एक ऑयल पेंटिंग है। इसे उन्होंने 1889 में बनाया था। यह एक लैंडस्केप है, जिसमें क्रॉप किया हुआ कंपोजिशन है और यह उन कई सौ पेंटिंग्स में से एक है, जो वान गॉग ने 1890 में अपनी मौत से एक साल पहले फ्रांस के सेंट-रेमी-डी-प्रोवेंस में सेंट पॉल-डी-मौसोल पागलखाने में बनाई थीं। यह 1990 से लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया में द गेटी के परमानेंट कलेक्शन में है। यह पेंटिंग जीवंत रूप से खिलते हुए आइरिस के फूलों को डायनामिक ब्रशस्ट्रोक के साथ दिखाती है। फूल गहरे नीले और बैंगनी रंगों का मिश्रण हैं, जो हरे पत्तों, लाल-नारंगी मिट्टी और बैक ग्राउंड में पीले फूलों के साथ कंट्रास्ट बनाते हैं। वैन गॉग की खास इंपेस्टो तकनीक पेंटिंग में टेक्सचर और मूवमेंट जोड़ती है, जिससे एक जोशीला और एक्सप्रेसिव एहसास होता है।

वान गॉग के बारे में

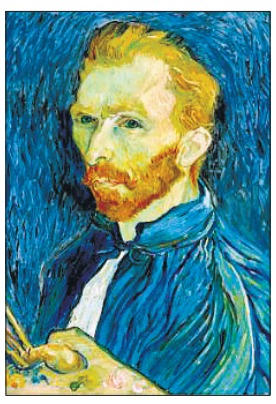

विंसेंट वान गॉग का जन्म 30 मार्च 1853 को नीदरलैंड के एक छोटे से गांव में हुआ था। अपने शुरुआती जीवन में, उन्होंने एक कला डीलर, शिक्षक और उपदेशक के रूप में काम किया, लेकिन उन्हें कहीं भी सफलता नहीं मिली। 27 साल की उम्र में, उन्होंने कला को अपना करियर बनाने का फैसला किया और अपने भाई थियो के वित्तीय सहयोग से पूरी तरह पेंटिंग के लिए समर्पित हो गए। अपने दस साल के कलात्मक करियर में, वान गॉग ने 2,000 से अधिक कलाकृतियां बनाईं, जिनमें लगभग 860 ऑयल पेंटिंग शामिल हैं। उनकी शैली बोल्ड रंगों, नाटकीय और अभिव्यंजक ब्रश स्ट्रोक और कंटूर्ड रूपों के लिए जानी जाती है, जिसने आधुनिक कला पर एक बड़ा प्रभाव डाला। उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध कृतियों में आइरिस, द स्टारी नाइट (The Starry Night), सनफ्लॉवर्स (Sunflowers), द पोटैटो ईटर्स (The Potato Eaters) और द बेडरूम (The Bedroom) शामिल हैं। उन्होंने अपनी जिंदगी में सिर्फ दो पेंटिंग बेचीं और वे भी बहुत कम कीमत पर। इसके अलावा उन्होंने अपनी कई पेंटिंग मुफ्त में दे दीं। उनकी जिंदगी में उनके काम की इतनी कम सराहना हुई कि एक पेंटिंग को तो मुर्गी के दड़बे के दरवाजे के तौर पर इस्तेमाल किया गया। उनके निधन के बाद दुनिया ने उनके काम को पहचाना। नवंबर 1987 में न्यूयॉर्क में एक नीलामी में, उनकी पेंटिंग 'आइरिस' (मई 1889) रिकॉर्ड 49 मिलियन डॉलर की कीमत पर बिकी।

रंग-तरंग

काशी तमिल संगमम

बीते सोमवार 15 दिवसीय प्रसिद्ध काशी तमिल संगमम 4.0 का समापन हुआ। इस वर्ष का संगमम रामेश्वरम में एक विशालसमापन समारोह के साथ खत्म हुआ, जो काशी से तमिलनाडु तक संस्कृति के उद्भव और विकास को सांकेतिक तौर पर पूरा किया गया। संगमम का प्रमुख उद्देश्य तमिलनाडु और काशी के बीच सांस्कृतिक और सभ्यातागत संपर्क को आगे बढ़ाना था। यह आयोजन उत्तर और दक्षिण भारत की संस्कृति के मिलन का उत्सव है। जब भी काशी और तमिल भाषा के

संबंधों की बात होती है, तो एक नाम सबसे प्रमुखता से सामने आता है महर्षि अगस्त्य का। महर्षि अगस्त्य केवल एक ऋषि नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के वह स्तंभ हैं, जिन्होंने उत्तर और दक्षिण को एक सूत्र में पिरोया। ऋषि अगस्त्य का काशी से गहरा नाता रहा। उन्हें तमिल भाषा का जनक भी माना जाता है। काशी तमिल संगमम 4.0 का यह संस्करण "लेट्स लर्न तमिल -तमिल करकलम" पर आधारित था, जिसमें तमिल भाषा सीखने और भाषा की एकता को संगमम का केंद्र थी। प्रमुख कार्यक्रम में तमिल करकलम (वाराणसी के स्कूलों में तमिल पढ़ाना), तमिल करपोम (काशी क्षेत्र के 300 छात्रों के लिए तमिल सीखने का स्टडी टूर) और ऋषि अगस्त्य वाहन अभियान (तेनकासी से काशी तक सभ्यतागत मार्ग का पता लगाना) शामिल रहा।

पहाड़ की बेटी ने नृत्य से गढ़ी अपनी राह

नारी सशक्तिकरण

क्या आपने कभी सोचा है कि संसाधनों की कमी और पहाड़ जैसी तमाम परेशानियों का सामना करने वाली छोटे से पहाड़ी कस्बे की बेटी अपनी घरेलू जिम्मेदारियों के बीच अपने हुनर को सोशल मीडिया के माध्यम से एक अंतर्राष्ट्रीय मंच तक ले जा सकती है? लेकिन ऐसा हुआ है और यह कर दिखाया है, उत्तराखंड के पिथौरागढ़ की रहने वाली जानकी रावत ने, जिन्होंने नृत्य के प्रति अपने बचपन के शौक को न केवल एक पहचान बनाया, बल्कि इसे आत्मनिर्भरता का माध्यम भी बना लिया। जानकी आज उन सभी महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हैं, जो मानती हैं कि उम्र या परिस्थितियां सपनों की राह में बाधा बन सकती हैं।

–रमेश जड़ौत, अल्मोड़ा

जागेश्वर में जन्मीं जानकी रावत को बचपन से ही संगीत का काफी शौक था और पह नृत्य को अपना कैरियर बनाने का सपना देखती थीं। स्कूल, कॉलेज के अलावा आसपास के इलाकों में उन्हें जहां भी अपनी प्रतिभा का हुनर दिखाने का मौका मिलता। वह उससे नहीं चूकती। कुमाऊं यूनिवर्सिटी से एम.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के बाद जानकी का विवाह हुआ। शादी और घरेलू दायित्वों के बावजूद, उन्होंने अपने अंदर के कलाकार को मरने नहीं दिया। स्कूल के दिनों से ही मंच पर अपनी छाप छोड़ने वाली जानकी के लिए पारिवारिक सहयोग एक ऐसी शक्ति बनकर उभरा, जिसने उन्हें अपनी कला को सोशल मीडिया के विशाल मंच पर प्रस्तुत करने का साहस दिया। ससुराल में पारिवारिक जिम्मेदारियों के बाद भी जानकी ने अपने कदम डिगने नहीं दिए। अलग-अलग मंचों पर अपनी प्रस्तुति के साथ ही उन्होंने अपने पति के सहयोग से अपनी प्रतिभा को सोशल मीडिया पर पहचान दिलाने की कोशिश शुरु की। शुरुआत में उन्होंने इंस्टाग्राम पर डांस की रील्स बनाना शुरू किया। उनकी कुमाऊंनी संस्कृति से जुड़ी प्रस्तुतियों को दर्शकों ने खूब सराहा। इस सकारात्मक प्रतिक्रिया ने उन्हें यूट्यूब चैनल जानकी रावत ब्लॉग शुरू करने के लिए प्रेरित किया। जिस पर उनकी इस प्रतिभा की सराहना करने वाले दर्शकों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। साथ ही अब सोशल मीडिया जानकी के लिए आजीविका का जरिया भी बन गया है।

कड़ी मेहनत से मिलने लगा मंचीय सम्मान

पिथौरागढ़ निवासी जानकी रावत की अपने हुनर के प्रति शिद्दत अब रंग लाने लगी है और उन्हें अब मंचीय सम्मान भी मिलने लगा है। वर्ष 2025 जानकी के लिए बेहद खास रहा। इस साल देश की सुप्रसिद्ध संस्कार सांस्कृतिक समिति अल्मोड़ा ने प्रतिष्ठित गोल्ज्यू महोत्सव 2025 में अपने जीवन का पहला स्टेज शो करने का मौका दिया। जानकी ने यहां भी अपने हुनर का जमकर जादू बिखेरा और दर्शकों की खूब वाहवाही भी लूटी।

आत्मविश्वास बांटने की पहल

जानकी रावत ने अपनी सफलता को केवल व्यक्तिगत नहीं रखा। अपने अनुभव और कोरियोग्राफी के ज्ञान का उपयोग करते हुए उन्होंने अब पिथौरागढ़ में अपनी डांस क्लास शुरू की है। यहां वह सिर्फ नृत्य नहीं सिखाती, बल्कि महिला सशक्तिकरण का बीज बोती हैं। उनकी कक्षा में बच्चियां और महिलाएं अपनी रचनात्मकता को पहचान रही हैं और आत्मविश्वास हासिल कर रही हैं। यह पहल दिखाती है कि एक सफल महिला न केवल खुद आगे बढ़ती है, बल्कि दूसरी महिलाओं के लिए भी रास्ते बनाती है। जानकी की यात्रा यह सिद्ध करती है कि प्रत्येक महिला के अंदर एक अनूठी प्रतिभा छिपी होती है। जरूरत है उसे पहचानने और सही मंच देने की। आपकी परिस्थितियां चाहे जो भी हों, दृढ़ इच्छाशक्ति और परिवार के थोड़े से सहयोग से आप भी अपनी पहचान बना सकती हैं।